अगस्त 2026 अंक में प्रकाशित

आपको याद दिलाने के लिये

आपको इस मास ये साधनाएं सम्पन्न करनी हैं
जिनका पूर्ण विवरण पिछले माह अगस्त 2026 में प्रकाशित है

लक्ष्य सिद्धि 'क्लीं' साधना

(कृष्ण जन्माष्टमी – 4 सितम्बर 2026
अथवा किसी भी शुभ मुहूर्त में)

क्लीं साधना लक्ष्य निर्धारण और लक्ष्य सिद्धि के लिये बहुत महत्वपूर्ण है। भगवान श्रीकृष्ण का बीज मंत्र 'क्लीं' है। 'क्लीं' सर्वाधिक सम्मोहन प्रदायक बीज मंत्र है जिसके मंत्र जप से व्यक्ति अपनी क्षमताओं, अपनी शक्ति पर नियन्त्रण स्थापित करने में सफल होता है। क्लीं साधना साधक के जीवन में संशयों को समाप्त कर, जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने की शक्ति प्रदान करती है। जिन साधकों को लक्ष्य निर्धारण अथवा स्वयं की क्षमताओं पर अविश्वास हो वे इस साधना को अवश्य सम्पन्न करें।

लक्ष्य सिद्धि की यात्रा केवल बाहरी उपलब्धि की यात्रा नहीं है। यह स्वयं को अनुशासित करने, भय से ऊपर उठने, निरन्तर कर्म करने और अंततः समत्व को प्राप्त करने की यात्रा है। संकल्प लक्ष्य प्राप्ति का आरम्भ है, पुरुषार्थ उसका मार्ग है और सन्तुलन उसकी अंतिम सिद्धि है।

लक्ष्य प्राप्ति के अभाव में हमारा मन असन्तुलित भावनाओं के बहाव में बह जाता है और असन्तुलित मन निर्णयों को प्रभावित करता है और लक्ष्य के अभाव में विसंगतियों और व्यर्थ के कार्यों में मनुष्य उलझ जाता है।

– प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. – 600/– (अगस्त 2026 पृष्ठ सं. 10)

लक्ष्य सिद्धि क्लीं दीक्षा

(कृष्ण जन्माष्टमी – 4 सितम्बर 2026
अथवा किसी भी शुभ मुहूर्त में)

संसार में वही व्यक्ति सफल होते है जिनके कर्म में लक्ष्य की स्पष्टता, श्रद्धा और दिव्य मार्गदर्शन जुड़ा होता है, तभी वह सिद्धि का माध्यम बनता है। लक्ष्य सिद्धि क्लीं दीक्षा इसी आन्तरिक रूपान्तरण का प्रारम्भ है।

'क्लीं' केवल एक बीजाक्षर नहीं है, बल्कि यह आकर्षण, एकाग्रता, संकल्प शक्ति और लक्ष्य से आत्मा के मिलन का दिव्य स्पन्दन है। जब यह बीज मंत्र सद्गुरु की चेतना से अभिमन्त्रित होकर शक्तिपात के माध्यम से शिष्य के भीतर प्रतिष्ठित होता है, तब साधक के भीतर बिखरी हुई ऊर्जा एक केन्द्र पर एकत्रित होने लगती है।

लक्ष्य सिद्धि क्लीं दीक्षा के प्रभाव से * साधक के निर्णयों में स्पष्टता आती है * समय का सदुपयोग होने लगता है * आलस्य और भ्रम कम होने लगते हैं * आत्मविश्वास बढ़ता है * परिस्थितियों से संघर्ष करने का साहस विकसित होता है * जीवन ऊर्जा व्यर्थ के विचारों में नष्ट न होकर लक्ष्य की दिशा में प्रवाहित होती है।

– लक्ष्य सिद्धि 'क्लीं' दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. – 3100/–
(अगस्त 2026 पृष्ठ सं. 11)

महाविद्या महाकाली साधना

(महाकाली जयन्ती - 4 सितम्बर 2026 अथवा किसी भी शुभ मुहूर्त में)

बाधाओं का नाश कर ही जीवन में लक्ष्य सिद्धि प्राप्त की जा सकती है। हमारे जीवन की बाधाएं भी प्रायः आसुरी शक्ति रक्तबीज की भांति ही होती हैं, एक को समाप्त करते हैं तो दूसरा जन्म ले लेता है।

हमारे जीवन के रक्तबीज दूसरों के कारण उत्पन्न होने वाली बाधाएं ही नहीं बल्कि स्वयं का आलस्य, असंयम, आत्मविश्वास की कमी भी है। इन रक्तबीजों को समाप्त कर ही लक्ष्य प्राप्ति संभव है, इनके मूल कारण को पहचानकर समाप्त करना आवश्यक है।

काली की उपासना का यही रहस्य है कि वे साधक के समस्त भय, संकोच और दुर्बलता को जड़ से समाप्त कर देती हैं, जिससे साधक हर बाधा को विघ्न नहीं, अपितु अपने संकल्प की परीक्षा मानकर आगे बढ़ता है। महाकाली साधना से जीवन में बाधा, शत्रु, भय, इत्यादि तो समापन होते ही साधक का जीवन अष्ट पाशों से मुक्त हो जाता है, आरोग्यता प्राप्त होती है, अज्ञान रूपी अंधकार मिट जाता है और धन-धान्य, मान-पद, प्रतिष्ठा में अभिवृद्धि होती है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 750/- (अगस्त 2026 पृष्ठ सं. 12)

महाविद्या महाकाली दीक्षा

(महाकाली दीक्षा - 4 सितम्बर 2026 अथवा किसी भी शुभ मुहूर्त में)

शक्ति के उग्र स्वरूप को महाकाली की संज्ञा से विभूषित किया गया है। महाकाली का भयावह स्वरूप मनुष्य के मन में जो बाधाएं हैं, अवरोध हैं, निम्नकारी स्थितियां हैं, उनका विनाश करने के लिये है। व्यक्ति को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है, वह हर क्षण आकस्मिक संकट, बाधाओं और तनावों से जूझता रहता है। असफल होने पर अत्यधिक दुःखी और तनावग्रस्त हो जाता है, दिन-प्रतिदिन तनाव में फंसता ही जाता है। ऐसी विषम परिस्थितियों से महाकाली मुक्त करा सकती है।

'महाकाली दीक्षा' प्राप्त कर यदि साधक श्रद्धा से काली साधना सम्पन्न करता है, तो सफलता अवश्य प्राप्त होती है। सद्गुरु द्वारा सात चरणों में महाकाली दीक्षा प्राप्त कर, अपने जीवन को सकरात्मकता और विश्वास से परिपूर्ण करें।

- महाकाली दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/- (अगस्त 2026 पृष्ठ सं. 13)

संतान गोपाल साधना

(गोपाल संतान सप्तमी - 18 सितम्बर 2026 अथवा किसी भी शुभ मुहूर्त)

गृहस्थ जीवन की दृष्टि से संतान वह दिव्य प्रसाद है, जो दाम्पत्य को पूर्णता प्रदान करता है। संतान के अभाव में गृहस्थ सुख की पूर्णता संभव ही नहीं है। संतान के अभाव में नारी पूर्ण नहीं मानी जाती है क्योंकि संतान को वात्सल्य का प्रतिरूप माना जाता है। संतान के अभाव में परिवार में कलह की स्थिति बनी रहती है और आपसी सम्बन्ध शिथिल होने लगते है।

संतान होना जीवन का सौभाग्य है इसके साथ यह भी आवश्यक है कि हमारी संतान तेजस्वी हो, गुणवान हो, पूर्ण आयु प्राप्त करें। उस पर किसी भी प्रकार का तंत्र दोष अथवा नजर का प्रभाव न हो। संतान अपने कुल के सम्मान में अभिवृद्धि करें। इस हेतु संतान गोपाल साधना निरन्तर करनी ही चाहिये।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/- (अगस्त 2026 पृष्ठ सं. 27)

मदनाक्षी अप्सरा साधना

(किसी भी शुभ मुहूर्त में)

मदनाक्षी अप्सरा सौन्दर्य की साकार प्रतिमा है, जिनमें देवताओं की शक्ति का अंश-आकर्षण भरा है। जो कार्य आपका सच्चा मित्र कर सकता है, जिस प्रकार आप खुल कर अपने मित्र से व्यवहार करते हैं, उसी प्रकार मदनाक्षी अप्सरा भी अपने साधक के प्रति मित्र भाव रहता है और इस सहयोग के पीछे न तो कोई वासना है, न ही अपने से अलग समझने की स्थिति, यह तो भीतर ही भीतर शक्ति जाग्रत कर, मदनाक्षी अप्सरा की शक्ति प्राप्त कर एक श्रेष्ठता प्राप्त करने की सुन्दर, आनन्द युक्त प्रक्रिया है। मदनाक्षी अप्सरा की उत्पत्ति चौदह रत्नों से हुई है, और यह लक्ष्मी तत्व युक्त अप्सरा है। मदनाक्षी सिद्ध व्यक्ति के जीवन में अनंग काम तत्व सहस्त्र गुना बढ़ जाता है तथा उस साधक पर लक्ष्मी की कृपा भी लगातार बनी रहती है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 750/- (अगस्त 2026 पृष्ठ सं. 17)

सिद्धिदायक गणपति साधना

(गणेश चतुर्थी - 14 सितम्बर 2026)

मनुष्य के दैनिक कार्यों में सफलता, सुख-समृद्धि की कामना, बुद्धि एवं ज्ञान के विकास एवं किसी भी मंगल कार्य को निर्विघ्न सम्पन्न करने हेतु सिद्धिदायक गणपति साधना सम्पन्न की जाती है। गणपति का व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुआयामी एवं बहुरंगी है यानी बुद्धिमत्ता, चातुर्य, युद्धनीति में पारंगत, प्रेमभाव युक्त।

सिद्धिदायक गणपति साधना अत्यन्त ही सरल और सुगम मानी जाती है और तीक्ष्ण प्रभावकारी भी। यदि किसी व्यक्ति का कोई कार्य बार-बार प्रयत्न करने पर भी न हो पा रहा हो तो ऐसे में 'सिद्धिदायक गणपति साधना' करने पर मार्ग में आये अवरोधों को हटाकर सफलता व श्रेष्ठता प्राप्त की जा सकती है। सिद्धिदायक गणपति साधना, साधक के लिये जितनी भौतिक उन्नति में लाभदायक है, उतनी ही आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी सर्वोपरि है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/- (अगस्त 2026 पृष्ठ सं. 62)

कार्य पूर्णता गणपति दीक्षा

(गणेश चतुर्थी - 14 सितम्बर 2026)

सद्गुरु शक्तिपात दीक्षा के माध्यम से आज्ञा चक्र में गणपति भाव को स्थापित करते है। सद्गुरु साधक के जीवन में संशय को समाप्त करते है, जिससे उसकी बुद्धि स्थिर हो, एकाग्र भाव हो। कार्य पूर्णता गणपति दीक्षा साधक के बुद्धि तत्व को जाग्रत करने की महान् चेतना क्रिया है।

ज्ञान और (बुद्धि) के साथ जो कार्य किया जाता है उसमें अवश्य लक्ष्य सिद्धि होकर फल प्राप्त होता है और ज्ञान का स्वरूप गुरु को कहा गया है और भगवान गणेश बुद्धि प्रदाता कहे गये है अर्थात् ज्ञान के स्वरूप गुरु से कार्य पूर्णता शक्तिपात दीक्षा के माध्यम से शिष्य जब शक्ति प्राप्त कर गणेश का आह्वान कर कार्य का श्रीगणेश करता है, तो उस कार्य में पूर्णता अवश्य प्राप्त होती है।

साधक शिष्य कोई भी नवीन कार्य प्रारम्भ करें, भूमि-भवन की खरीद अथवा कोई भी अन्य शुभ कार्य सबसे पहले सद्गुरुदेव से 'कार्य पूर्णता गणपति दीक्षा' ग्रहण कर कार्य प्रारम्भ करें।

- कार्य पूर्णता गपति दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/-
(अगस्त 2026 पृष्ठ सं. 64)